



Hargharpanditji

॥ एकादशी व्रत की पारण-विधि ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ एकादशी व्रत की पारण-विधि ॥

पारण का अर्थ है—एकादशी के व्रत का समापन करना। शास्त्रों के अनुसार एकादशी का व्रत द्वादशी तिथि में, निर्धारित पारण समय के भीतर ही करना चाहिए। समय पर पारण करने से व्रत का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

पारण का समय

पारण सदैव द्वादशी तिथि में किया जाता है।

पारण का सर्वोत्तम समय सूर्योदय के बाद माना जाता है। यदि द्वादशी तिथि अल्पकाल के लिए हो, तो उसी अवधि में पारण अवश्य कर लेना चाहिए।

हर एकादशी का पारण-समय पंचांग के अनुसार भिन्न हो सकता है, इसलिए स्थानीय पंचांग का पालन करना उचित है।

पारण से पूर्व

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठें।

स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

भगवान श्री विष्णु, माता लक्ष्मी और तुलसी जी का पूजन करें।

दीप, धूप, पुष्प, नैवेद्य अर्पित करें।

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" या "ॐ नमो नारायणाय" मंत्र का जप करें।

भगवान से व्रत की पूर्णता एवं क्षमा की प्रार्थना करें।

पारण की विधि

भगवान को भोग अर्पित करें।

तुलसी दल अर्पित कर चरणामृत ग्रहण करें।
जल या पंचामृत से व्रत खोलें।
इसके बाद सात्त्विक भोजन ग्रहण करें।
भोजन से पहले गाय, ब्राह्मण, साधु या किसी जरूरतमंद को यथाशक्ति
अन्न, फल या दक्षिणा देना शुभ माना जाता है।
भोजन में सात्त्विक एवं सुपाच्य पदार्थ ग्रहण करें।

पारण में क्या खाएं?

फल
दूध या दही
खीर
मूंग की दाल (यदि परंपरा में स्वीकार हो)
चावल, रोटी एवं अन्य सात्त्विक भोजन (पारण के बाद)
घी युक्त भोजन

पारण के दिन क्या करें?

भगवान विष्णु का स्मरण करें।
तुलसी जी की पूजा करें।
दान-पुण्य करें।
ब्राह्मण अथवा निर्धन व्यक्ति को भोजन कराएं।
यथाशक्ति गौ-सेवा करें।

किन बातों का ध्यान रखें?

द्वादशी तिथि समाप्त होने से पहले पारण अवश्य करें।
बिना उचित कारण के द्वादशी तक निरंतर उपवास नहीं बढ़ाना चाहिए

पारण के दिन तामसिक भोजन, मदिरा और मांसाहार से बचें।
क्रोध, असत्य और अपशब्दों से दूर रहें।

पारण के समय प्रार्थना

हे श्रीहरि! आपकी कृपा से मेरा एकादशी व्रत पूर्ण हुआ।
यदि इस व्रत में मुझसे कोई त्रुटि हुई हो तो कृपया उसे क्षमा करें।
मुझे सदैव धर्म, भक्ति, सदाचार और आपके चरणों में अटूट प्रेम प्रदान
करें।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः॥

पारण का आध्यात्मिक महत्व

शास्त्रों में कहा गया है कि जैसे श्रद्धापूर्वक एकादशी का व्रत करना आवश्यक है, वैसे ही समय पर द्वादशी में पारण करना भी उतना ही आवश्यक है। विधिपूर्वक पारण करने से व्रत पूर्ण माना जाता है तथा भगवान श्री विष्णु की कृपा, मानसिक शांति, पुण्य और आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति होती है।